Bihar board class 8th Geography Notes Chapter 3A

(क) लौह-इस्पात उद्योग

पाठ का सारांश :- अधिकांश वस्तुएँ जिनका उपयोग हम दैनिक उपयोग में वस्तुओं, औजारों व मशीनों के रूप में करते हैं, वे सभी लोहा या इस्पात से बनती हैं। जैसे—रेलगाड़ी, बस, पुल, साइकिल इत्यादि । इसके अलावा खनन में प्रयोग होने वाली मशीनें, कृषि उपकरण, बड़े-बड़े पोत,
रेलमार्ग, औद्योगिक व विद्युत इकाईयाँ इत्यादि सभी का निर्माण लौह इस्पात से किया जाता है।
इन सभी वस्तुओं के निर्माण हेतु जिस स्थान पर लौह-इस्पात का उत्पादन किया जाता है, उन्हें लौह-इस्पात उद्योग केन्द्र कहा जाता है। भारत में प्रमुख लोहे इस्पात केन्द्र झारखण्ड, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, तमिलनाडु में है। यह एक आधारभूत या पोषक उद्योग है जिसके उत्पाद पर अन्य दूसरे उद्योग निर्भर हैं। भारत में छोटानागपुर पठार के सटे क्षेत्र, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, पं. बंगाल उच्च कोटि के लौह अयस्क तथा अच्छी गुणवत्ता वाले कोककारी कोयला और अन्य संसाधनों से परिपूर्ण हैं। जिसके कारण इन प्रदेशों में लौह इस्पात उद्योग स्थापित किये गये हैं। इसी प्रकार, कर्नाटक में भद्रावती और विजयनगर, आंध्रप्रदेश में विशाखापतनम्, तमिलनाडु में सेलम स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर रहे हैं। इस्पात के निर्माण के लिए सबसे पहले कच्चे माल के रूप में लौह अयस्क एवं अन्य खनिज प्राप्त किया जाता है। इसे झोंककर भट्ठी (बलास्ट फर्नेस) में गलाया जाता है। यह तरल रूप में आ जाता है तो इसे साँचे में डालकर ढलवा लोहा बनाया जाता है । ढलवाँ लोहे को पुनः गलाकर ऑक्सीकरण द्वारा अशुद्धता हटाकर मैंगनीज, निकल, क्रोमियम चूना-पत्थर मिलाकर शुद्ध किया जाता है तथा मिश्र धातु बनाया जाता है। अब इस धातु को रोलिंग, प्रेसिंग एवं ढलाई के द्वारा निश्चित आकार दिया जाता है।
भारत में इस्पात बनाने का पहला कारखाना 1907 ई. में साकची नामक स्थान पर प्रसिद्ध उद्योगपति श्री जमशेदजी टाटा द्वारा लगाया गया था । यह स्थान वर्तमान में झारखंड में स्थित है।
इस संयंत्र के लिए लौह अयस्क नोआमंडी, बदाम पहाड़ एवं गुरु महिसानी (उड़ीसा) की पहाड़ियों से प्राप्त होता है जो यहाँ से लगभग 100 किलोमीटर दूर है। कुल अयस्क की आवश्यकता का 50% भाग अकेले नोआमंडी से आता है। कोयला झरिया की खानों से मिलता है। चूना-पत्थर 320 किलोमीटर की दूरी से विशेषकर विरमित्रपुर, हाथीबारी, बिसरा और कटनी से आता है।
डोलोमाईट पागपोश से आता है । पानी की आवश्यकता स्वर्णरेखा और खरकई नदियाँ पूरा करती हैं। टिस्को के संयत्र से सलाखें, गर्डर, पहिए और पटरियाँ, चादरें, स्लीपर एवं फिश प्लेट बनाये जाते हैं। यहाँ उत्पादित माल को दूसरी जगह भेजने के लिए जमशेदपुर का संयंत्र दक्षिण पूर्वी रेलमार्ग द्वारा कोलकाता एवं शेष भारत से जुड़ा है तथा सड़क मार्गों से भी अच्छी प्रकार जुड़ा है। कोलकाता पत्तन द्वारा निर्मित सामान को विदेशों में भी भेजा जाता है। यहाँ स्थानीय संथाली लोग काम करते हैं और इनके साथ-साथ बिहार, पश्चिम-बंगाल, उड़ीसा तथा मध्य प्रदेश के लोग भी कार्य करते हैं।
बोकारो में भी लौह इस्पात उद्योग केन्द्र हैं जिनकी स्थापना 1964 ई. में की गयी थी। इस संयंत्र के लिए लौह अयस्क किरीबुरू (उड़ीसा) से प्राप्त होता है। यहाँ अनेक प्रकार के उद्योगों के लिए सहायक कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होने वाली स्टील की चादरें, गर्डर, सलाखें, लौह के पैड, रेलपटरियाँ, फिश प्लेट इत्यादि बनाये जाते हैं।
लौह इस्पात उद्योग को किसी भी देश के उद्योगों की रीढ़ माना जाता है क्योंकि औद्योगिक विकास हेतु बुनियादी वस्तु, औजारों, मशीनों व आधारभूत ढाँचे का निर्माण लौह-इस्पात से ही होता है। यदि हम विश्व परिप्रेक्ष्य में देखें तो ज्ञात होगा कि जिन देशों में लौह इस्पात की खपत
अधिक है वे देश ही विकसित हैं। अगर भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखें तो स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राष्ट्र निर्माताओं ने इस उद्योग की आवश्यकता को समझते हुए सर्वप्रथम इस उद्योग को स्थापित किया और आज यह उद्योग देश की अधिकांश आवश्यकता की पूर्ति के साथ इस्पात का निर्यात

https://www.evidyarthi.in/

भी कर रहा है। भारत केवल उच्च कोटि के कुछ इस्पात का आयात करता है। भारत विश्व में स्पंज लोहे का सबसे बड़ा उत्पादक है। अब तो भारत में विदेशों से प्राप्त लोहा-इस्पात स्क्रैपर से नया इस्पात तैयार कर धन व साधनों की बचत कर रहा है।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/